International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

हरि सिंह नालवा का पंजाब के इतिहास में योगदान

अमित कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

परमिंदर कौर

छात्रा, *MA*, इतिहास, (द्वितीय वर्ष) देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

शोध संक्षेप

हरि सिंह नालवा का जन्म 28 अप्रैल 1791 ई. को गुजरावाला, पंजाब के एक सिख परिवार में हुआ था. इनके पिता गुरदयाल सिंह और माँ धर्म कौर थीं. बचपन में घर के लोग प्यार से इसे हरिया कहते थे. जिस समय वे सात वर्ष के थे उस समय उसके पिता का देहांत हो गया था. 1805 ई में वसंतोत्सव पर एक खोज प्रतियोगिता में जिसे महाराजा रणजीत सिंह ने आयोजित किया था, हरी सिंह ने भाला, तीरंदाजी आदि में

अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया जिससे खुश होकर महाराजा रणजीत सिंह ने उन्हें अपनी सेना में भर्ती कर

लिया. जल्दी ही वे महाराजा के विश्वासपात्रों में शामिल हो गये. एक शिकार के दौरान उन्होंने एक शेर के हमले से महाराजा रणजीत सिंह की जान बचाई. इसी वाकये में महाराजा ने उन्हें कहा- अरे ! तुम तो राजा नल जैसे वीर हो?. तभी से उन्हें नलवा कहा जाने लगा. हरि सिंह नलवा को 'सरदार' की उपाधि भी दी गयी. उन्होंने अपनी बहादुरी से इतिहास में विशेष स्थान हासिल किया था. इसके बावजूद भी शायद हरी सिंह नालवा को इतिहास में वह जगह नहीं मिली जिसके वे हकदार हैं. मेरे इस पेपर का उद्देश्य हरि सिंह नालवा के जीवन के उन पहलुओं को उजागर करना है जिसके बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है.

मुख्य शब्द : हरि सिंह नालवा, महाराजा रणजीत सिंह, पंजाब का इतिहास

भूमिका

सदियों का इतिहास जब रूबरू होता है तो उसमे एक से बढ़कर एक वीर योद्धाओं का वर्णन प्राप्त होता है. इन वीरों में एक नाम हरि सिंह नालवा का भी है. वह एक कुशल सेनानी थे. उनकी बहादुरी का भय अफगानियों व पठानों में भी रहता था. पेशावर से लेकर काबुल तक उनकी तूती बोलती थी. कश्मीर और काबुल को सिख राज्य के अधीन करने वाले हरि सिंह नालवा आज भी सिख इतिहास में महत्वपूर्ण नाम हैं. नौशेरा के युद्ध में उन्होंने महाराजा रणजीत सिंह की सेना का नेतृत्व किया और 1837 में जमरौद की जंग में शहीद हुए.[1]

भारत पर जब भी विदेशी आक्रमण हुए हैं तो इसकी शुरुआत पंजाब और सिंध से ही हुई है. सिख राज्य सबसे अधिक आक्रमण झेलने वाला राज्य है. हरि सिंह नालवा का नाम उन योद्धाओं में सम्मान से लिया जाता है जिन्होंने सिख राज्य के प्रसार में अपने जीवन का बलिदान दिया है. वे सिख विद्रोही कबीलों के लिए आतंक का पार्याय बन चुके थे.[2]

[1] जमरौद की जंग सिख सरदार हरि सिंह नालवा और अफगानों के मध्य 30 अप्रैल 1837 ई. को हुआ था. इसमें हरि सिंह नालवा गोलियों से छलनी होकर शहीद हो गये थे.

[2] नालवा, प्रीती, *"सरदार हरि सिंह नालवा की 174 वीं पुण्यतिथी"* Retrieved at -30/08/2017, URL: www.harisinghnalwa.com

वे महाराजा रणजीत सिंह के 40 वर्षों के शासन की रीढ़ थे. उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रदेशों में आज भी लोकगीतों के महानायक हरि सिंह नालवा ही हैं. इतिहासकारों ने उन्हें गुरु गोविन्द सिंह की परम्परा का सही उत्तराधिकारी स्वीकार किया है. सर हेनरी ग्रिफिन[3] ने उन्हें "खालसा का चैम्पियन" कहा है. ब्रिटिश शासकों ने उनकी तुलना नेपोलियन के कमांडरों से की है.

महाराजा रणजीत सिंह के समय हरी सिंह नालवा लगातार अफगानों के खिलाफ युद्ध करते रहे. नालवा ने अफगानों से कसूर, मुल्तान, कश्मीर, पेशावर में सिख झंडा बुलंद किया. सिन्धु नदी के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में अफगानी अनेक कबीलों में बंटे हुए थे. आज भी अफगानियों में कबीलाई शासन प्रणाली ही प्रमुख है. कबीलाई प्रणाली से जूझना और उनसे लोहा लेना जटिलतम है. अंग्रेज अनेक प्रयासों के बाद भी कभी अफगानियों से जीत नहीं सके. भारत का इण्डिया गेट अंग्रेजों ने उन्ही शहीदों की याद में बनवाया है जो अफगान युद्ध में शहीद हुए थे. लेकिन जो कार्य वह साम्राज्य नहीं कर पाया जिसके राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, वह कार्य नालवा ने किया. उन्होंने अफगानिस्तान के अनेक कबीलों का विजय कर उन्हें अपने राज्य में मिला लिया. अफगान साम्राज्य के एक बड़े हिस्से पर सिख साम्राज्य का विस्तार करने का श्रेय हरी सिंह नालवा को है. इतिहास में दर्ज नहीं है लेकिन लोकगीत बताते हैं कि नालवा ने अपनी बहादुरी से लड़ते हुए अफगानों को खैबर दर्रे के उसपार भगा दिया था. इस बहादुरी ने इतिहास की धारा ही बदल कर रख दी. उसपार खदेड़ कर नालवा ने खैबर दर्रे का रास्ता ही बंद कर दिया और अफगानों का आगमन रोक दिया.[4] हरि सिंह नालवा का योगदान केवल यहीं तक सीमित नहीं था, 1802 में कसूर, 1813 में अटक, 1818 में मुल्तान, 1819 में काश्मीर के बाद नालवा ने 1823 ई. में पेशावर को जीत लिया.[5] मुल्तान की जीत में हरि सिंह नालवा का योगदान अतुल्य है. महाराजा रणजीत सिंह के आत्मबलिदानी दस्ते में नालवा सबसे आगे रहे. 1808 ई. में महाराजा रणजीत सिंह ने सियालकोट पर धावा बोला जिसके मुख्य सेनानायक थे नालवा.नालवा ने सियालकोट को जीत कर महाराजा को सौंप दिया जिससे महाराजा रणजीतसिंह बहुत प्रभावित हुए.[6] कश्मीर विजय में नालवा के योगदान को सम्मान देते हुए महाराजा रणजीत सिंह ने कश्मीर में उनके नाम से एक सिक्का चलाया जिसे 'हरि सिंही' के नाम से जाना जाता है. यह सिक्का आज भी संग्रहालय में उपलब्ध है.[7] सिंध सागर दोआब की जीत के बाद नालवा को हजारा का गवर्नर बना दिया गया.

महाराजा रणजीत सिंह को पेशावर जीतने के लिए बहुत प्रयत्न करने पड़े. पेशावर पर अफगानिस्तान के शासक के भाई सुलतान मोहम्मद का राज था.[8] इस युद्ध में हरि सिंह नालवा ने सेना का नेतृत्व किया. पठान और अफगानी सैनिकों के साथ जेहाद के नाम पर एक 'मुल्की सेना' भी रहती थी. 1823 ई. में अटक के पार नौशहरा में दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ. 10000 अफगान सैनिक मारे गये और इधर भी अकाली फूला सिंह और हजारो सिख भी बलिदान हुए फिर भी हरी सिंह नालवा ने नौशहरा की जीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया. यहाँ का शासक हरि सिंह नालवा से इतना भयभीत हुआ की पेशावर छोड़कर भाग गया और सिक्खों ने पेशावर पर फिर से अपना आधिपत्य

[3] सर हेनरी ग्रिफिन की पहचान अंग्रेजों के समय का एक प्रशासक, अधिकारी और राजनायिक के रूप में है. वह एक इतिहासकार भी था.

[4] नालवा, प्रीती, *"सरदार हरि सिंह नालवा की 174 वीं पुण्यतिथी"* Retrieved at -30/08/2017, URL: www.harisinghnalwa.com

[5] मित्तल, डॉ सतीश चन्द्र (2009), *इतिहास दृष्टि*, Retrieved at 30/08/2017. URL: www.Panchjanya.com

[6] गजरानी, शिव (2002), *पंजाब का इतिहास,* पटियाला: मदान प्रकाशन, पेज- 238

[7] नालवा, प्रीती, *"सरदार हरि सिंह नालवा की 174 वीं पुण्यतिथी"* Retrieved at -30/08/2017, URL: www.harisinghnalwa.com

[8] मित्तल, डॉ सतीश चन्द्र (2009), *इतिहास दृष्टि*, Retrieved at 30/08/2017. URL: www.Panchjanya.com

जमा लिया. यह नगर 1 लाख खिराज के बदले यार मुहम्मद खान को दे दिया गया.[9] एक किम्वदंती है कि अफगानिस्तान में एक बार बरसात के मौसम में नालवा ने देखा कि वे अपने छत को ठोंक-पीट रहे हैं. नालवा को लगा कि अफगानियों को अगर काबू में रखना है तो आतंक व बल से ही रखा जा सकता है. तभी से उन्होंने अफगानों के लिए बल प्रयोग की नीति अपना ली.[10] पेशावर जब जब चुनौती बन कर उठा तब तब नालवा ने इस चुनौती का उचित जवाब दिया. महाराजा रणजीत सिंह भी पेशावर के बार-बार के बगावत से तंग आ गए थे और उन्हें नालवा के अलावा और कोई हल नहीं सूझता था. महाराजा ने नालवा को इस इलाके में स्थाई तौर पर नियुक्त कर रखा था क्यों कि नालवा के अतिरिक्त इस इलाके की शांति और कोई वापस नहीं ला सकता था.[11]

उत्तर पश्चिम सीमा पर नालवा के रणनीति का विवरण ब्रिटिश इतिहासकार सर लेपल ग्रिफिन ने विस्तार से दिया है. जब महाराजा अपने बेटे नौनिहाल सिंह की शादी में व्यस्त थे उस समय नालवा उत्तर-पश्चिम सीमा की रखवाली कर रहे थे. अचानक एक बहुत बड़ी अफगान सेना ने किले पर आक्रमण किया. नालवा अभी तैयार नहीं थे, उन्होंने आधी रात अपनी सेना को महा सिंह[12] के नेतृत्व में मोर्चे पर तैनात किया. इसी अफरातफरी में एक गोली नालवा को कहीं से आ लगी और यह वीर सपूत स्वामिभक्ती की परीक्षा देते-देते सदा के लिए मौत की आगोश में चला गया. मरते-मरते नालवा ने महा सिंह को हिदायत दी कि किसी को पता न चले कि मेरी मौत हो चुकी है अन्यथा किला नहीं बचेगा. अफगान सेना घेरा डाले रही लेकिन आगे बढ़ कर किले पर कब्ज़ा करने की उनकी हिम्मत नहीं हुई. नालवा का खौफ उनके दिलो-दिमाग में ऐसा काबिज था. कुल 6 दिन घेरा डालने के बाद अफगान सेना हार कर लौट गयी. यह किला जमरोद का था. महाराजा रणजीत सिंह जब नालवा की शहीदी के बारे में सुने तो उनकी प्रतिक्रिया के बारे में कन्हैयालाल लिखते हैं- " The Maharaja shed tears from the eyes of his soul and heart"[13]

निष्कर्ष

जब जब पंजाब का इतिहास लिखा जाएगा या महाराजा रणजीत सिंह के योगदानो का जिक्र आएगा वह इतिहास या वे समस्त योगदान तब तक अधूरे रहेंगे जबतक उसमे हरि सिंह नालवा के योगदानो को शामिल नहीं किया जाएगा. हरि सिंह नालवा के ऊपर इतिहास में शोध बहुत कम हुए हैं. इतिहास में आज नालवा को वह स्थान नहीं मिल सका है जो उन्हें मिलना चाहिए. नालवा का आतंक अफगानी भी मानते थे जिनके बारे में यह सुना जाता रहा है कि दुनियां की सबसे बहादुर और साहसी कौम पठान हुआ करते हैं. इतिहासकारों ने नालवा को 'अति तीव्रता से दुश्मन पर टूट पड़ने वाला सेनापति कहा है'.

संदर्भ सूची

1. बाबा, कुंद्रा (2000), *आधुनिक इतिहास*, जालंधर: नीलम प्रकाशन
2. गजरानी, शिव (2002), *पंजाब का इतिहास,* पटियाला: मदान प्रकाशन
3. मित्तल, डॉ सतीश चन्द्र (2009), *इतिहास दृष्टि,* Retrieved at 30/08/2017. URL: www.Panchjanya.com
4. नालवा, प्रीती, *"सरदार हरि सिंह नालवा की 174 वीं पुण्यतिथी"* Retrieved at -30/08/2017, URL: www.harisinghnalwa.com
5. सिंह, गुरुशरण और गंडा सिंह (2002), *पंजाब का इतिहास*, गाजियाबाद: अल्त्कार प्रकाशन

[9] बाबा, कुंद्रा (2000), *आधुनिक इतिहास*, जालंधर: नीलम प्रकाशन, पेज-196

[10] मित्तल, डॉ सतीश चन्द्र (2009), *इतिहास दृष्टि,* Retrieved at 30/08/2017. URL: www.Panchjanya.com

[11] सिंह, गुरुशरण और गंडा सिंह (2002), *पंजाब का इतिहास*, गाजियाबाद: अल्त्कार प्रकाशन, पेज-494

[12] महा सिंह हरि सिंह नालवा की सेना में एक सेनापति थे. इन्होने हरि सिंह नालवा की जमरोद की जंग में साथ दिया था.

[13] गजरानी, शिव (2002), *पंजाब का इतिहास,* पटियाला: मदान प्रकाशन, पेज- 108